अशुभ–शुभ–शुद्ध भाव

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सकारात्मक चिंतन, सकारात्मक दृष्टि और सकारात्मक सोच से मनुष्य सकारात्मक हो जाता है। भाव चेतना की शक्ति है। शरीर जड़ और चेतन का मिश्रण है। आत्मा सूक्ष्म है और जड़ स्थूल है। आत्मा का केवल अनुभव किया जा सकता है। जड़ पदार्थ स्थूल होने के कारण दिखलाई देता है। आत्मा के कारण ही शरीर कार्य करता है। शरीर धर्म की आराधना का साधन है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रह सकता है। आधि, व्याधि और उपाधि से स्थूल शरीर ही प्रभावित होता है। इन तीनों के लिए अशुभ, शुभ और शुद्ध को समझना है। भाव करने के बाद कर्म बीज बन जाता है। भाव सत्ता चेतना से जुड़ी है। वह चेतना की शक्ति है। मन, वचन और काया के रूप में वह प्रतिस्थापित होती है।

चौरासी लाख जीव योनियों के प्राणी इसी के माध्यम से कर्म करते हैं। चेतना सभी जीवों में समान है। कर्म के अनुसार शारीरिक भेद पैदा होता है। भाव धारा गंगौत्री है। अशुभ भाव भीतर से आता है। आत्मा के साथ शरीर के जुड़ाव का कारण अज्ञान है। जैसे संस्कार होते हैं वैसे ही अशुभ व शुभ भाव हो जाते हैं। अशुभ और शुभ भावों को शुद्ध करना है। अवचेतन मन में भाव रहता है।

जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए भाव शुद्धि और व्यवहार शुद्धि आवश्यक है। जैसा भाव होता है वैसे विचार बनते हैं और जैसा विचार होता है वैसा व्यवहार बनता है। भाव का अर्थ है हमारे भीतर से आने वाला चिन्तन। चिन्तन मन का कार्य है। बुद्धि मन पर नियन्त्रण रखती है। आत्मा के कारण सम्पूर्ण शरीर संचालित होता है। जीव का कार्यकलाप आत्मा के द्वारा होता है। कार्मण शरीर से जीवन संसार में आता है। पुद्गल और चेतन दो स्वतन्त्र द्रव्य हैं। धार्मिक प्रवृत्ति की ओर जब गमन होता है तो यह समझना चाहिए कि भाव शुद्ध हैं। आत्मा और शरीर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव की तरह दो छोर हैं, किन्तु दोनों मिले रहते हैं। तेजस शरीर लेश्या का जगत् है।

रंगों को लेश्या कहा जाता है। इनमें से कुछ प्रशस्त हैं और कुछ अप्रशस्त। तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या प्रशस्त लेश्याएं हैं। तेजो लेश्या से शरीर शान्त रहता है। यह उगते हुये सूर्य के समान है। पद्म लेश्या हल्दी के रंग की है। शुक्ल लेश्या से शुद्ध भाव बढ़ता है। लेश्याओं से भाव बनते हैं। कृष्ण लेश्या से क्रूरता का भाव, नील लेश्या से झूठ,कपट भाव और कापोत लेश्या से निम्न भाव उत्पन्न होते हैं। ये भाव कार्मण शरीर से बंध जाते हैं। यह स्थूल शरीर पर कार्य करता है। लेश्याएं वाइब्रेशन के माध्यम से कार्य करती हैं। शुभ विचार से धार्मिक प्रवृत्ति बढ़ती है। ऐसे भाव से भीतर यह होने लगता है कि सभी प्राणी समान हैं। मन, बुद्धि, इन्द्रियां प्रवृत्ति करती हैं। शुभ लेश्या वाला व्यक्ति बुरा कार्य नहीं करता। भाव भीतर से आते हैं। यदि लेश्याएं प्रशस्त हैं तो सुन्दर भाव ही आयेगा। यदि लेश्याएं अप्रशस्त हैं तो बुरा भाव प्रकट होता है।

आध्यात्मिक दृष्टि से लेश्याध्यान का प्रयोग भाव–शुद्धि का प्रयोग है। वैज्ञानिक दृष्टि से प्रत्येक रंग की अपनी तरंग दैर्ध्यता होती है तथा प्रत्येक रंग की अपनी प्रकृति होती है। ये तत्व व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। रंग–चिकित्सा में भी इन अतःस्रावी ग्रंथियों का सम्बन्ध रंग से होता है जिससे अनेक प्रकार के रोगों का उपचार किया जा सकता है। अतः ग्रंथियों के स्राव को भी रंगों के ध्यान द्वारा संतुलित किया जा सकता है।

लेश्या का अर्थ है– विशिष्ट रगंवाले पुद्गल द्रव्य के संसर्ग से उत्पन्न होने वाला जीव का परिणाम या चेतना का स्तर। लेश्या के दो भेद हैं–द्रव्य लेश्या और भाव लेश्या। पौद्गलिक लेश्या प्राणी के आभामंडल का नियामक तत्त्व है। ओरा में कभी काला, कभी लाल, कभी पीला, कभी नीला, और कभी सफेद रंग उभर आता है। भावों के अनुरूप बदलते रहते हैं। लेश्या के छह प्रकार हैं–कृष्ण, नील, कापोत, तैजस, पद्म और शुक्ल। इनमें प्रथम तीन अशुभ हैं और अन्तिम तीन शुभ हैं। भावधारा के आधार पर आभामंडल बदलता है और लेश्याध्यान के द्वारा आभामंडल को बदलने से भावधारा भी बदल जाती है। लेश्याध्यान या चमकते हुए रंगों का ध्यान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आभामंडल की व्याख्या रंगात्मक है। जिसमें लेश्या होती है उसका आभामंडल निश्चित रूप से शुभ अशुभ भावों के साथ बदलता है। यह बदलाव अच्छा

है या बुरा यह जानने के लिए रंगों की भाषा जानना जरूरी है। रंग मनुष्य के भावों के साथ बदलते रहते हैं। आभामंडल में होने वाले रंगों की भिन्न–भिन्न प्रकृति होती है। यह रंग मित्रता, प्रेम, स्वास्थ्य और शक्ति का, सुनहरा पीला उच्च प्रज्ञा का, नीला आध्यात्मिक और धार्मिक मनोवृत्ति का, नारंगी बुद्धि और न्याय का, हरा सहानुभूति का प्रतीक है।

सभ्य व्यक्ति के आभामंडल में उच्च स्तरीय किरणें होती हैं। उनके आभामंडल में पीला रंग, शुद्ध लाल रंग और साफ पीला रंग अधिक होता है। भाव शुद्धि और व्यवहार शुद्धि का सम्बन्ध हमारे भोजन से भी है। यदि सात्विक भोजन किया जाता है तो भाव और व्यवहार दोनों शुद्ध रहते है। यदि तामसिक भोजन किया जाता है तो भाव और व्यवहार दोनों अशुद्ध हो जाते हैं।